Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

10 जून 2026

वर्ष - 04, अंक - 06 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

पूरे एमपी को ट्रैफिक जाम से मिलेगी मुक्ति...

रतलाम, देवास समेत 6 छोटे शहरों में भी बनाए जाएंगे रिंग रोड़

भोपाल। भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन जैसे बड़े शहरों में यातायात का दबाव कम करने के लिए प्रमुख मार्गों पर एलिवेटेड कारिडोर के साथ ही रिंग रोड भी बनाया जा रहा है। अब बड़े शहरों के साथ छोटे शहरों में भी यातायात का दबाव बढ़ रहा है। इसे कम करने के लिए रतलाम, देवास, सागर, सतना, रीवा और कटनी जैसे छोटे शहरों में रिंग रोड बनाए जाएंगे। इसके लिए स्थानीय स्तर पर नगर निगम, टीएनसीपी एवं स्थानीय निकाय के साथ समन्वय कर समग्र योजना बनाई जाएगी।

इन शहरों में पहले से बने हुए बायपास को रिंग रोड में परिवर्तित करने पर भी विचार किया जा रहा है। इन परियोजनाओं से न केवल शहरों के भीतर का ट्रैफिक जाम कम होगा, बल्कि उद्योग और व्यापार को भी गति मिलेगी। बड़े शहरों में रिंग रोड निर्माण की रफ्तार और समय सीमा

इधर, पांच बड़े शहरों के लिए पूर्व से स्वीकृत रिंग रोड में जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन इन तीनों शहरों के रिंग रोड निर्माण कार्य को आगामी डेढ़ वर्ष में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। भोपाल के लिए 35.6 किमी लंबे पश्चिमी बायपास का निर्माण कार्य चल रहा है, जिसे आगामी ढाई साल में पूरा करने का लक्ष्य है। इंदौर के लिए डीपीआर बनाई जा रही है। ग्वालियर के लिए पर्यावरणीय स्वीकृति नहीं मिली है।

एमपी में मंडी टैक्स डेढ़ परसेंट किया गया, कपास पर घटाया

भोपाल। सीएम डॉ, मोहन यादव की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में आज कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। इसमें मध्य प्रदेश में मंडी टैक्स एक से बढ़ाकर डेढ़ परसेंट किया गया। इससे सरकार को लगभग 835 करोड़ रूपये एक साल में मिलेंगे जिसका उपयोग अधोसंरचना विकास और गोसंवर्धन के कामों में किया जाएगा। वहीं कपास पर मंडी शुल्क प्रति गठान पर एक रुपये के स्थान पर पचास पैसे किया गया है।

मेट्रो रेल प्रोजेक्ट के लिए अतिरिक्त राशि देने का प्रस्ताव भी मंजूर हुआ। मेट्रो रेल परियोजना की लागत में 3000 करोड रुपए की वृद्धि की गई। पहले यह 6941 हजार करोड़ रुपये थी, जो अब 10033 करोड़ रुपये हो गई है। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 12 वर्ष सफलता के साथ पूरे होने पर बधाई दी गई। प्रदेश में 21 जून तक विकास कार्यों का आयोजन किया जाएगा, 21 जून से शिविर भी लगेंगे। मुख्यमंत्री ने सभी मंत्रियों से कहा कि वे 15 जून तक तबादले काम पूरा कर लें, तारीख में फिलहाल कोई वृद्धि नहीं की जाएगी। उर्वरकों को लेकर मुख्यमंत्री ने सभी मंत्रियों को निर्देश दिए कि वह वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए किसानों को जागरूक करने का काम करें।

एमपी में मीनाक्षी नटराजन के नामांकन पर बीजेपी की आपत्ति, कांग्रेस की बढ़ी चिंता

भोपाल । मध्यप्रदेश में राज्यसभा चुनाव को लेकर सियासी पारा उबाल पर है। एक तरफ जहां भाजपा ने तीसरा प्रत्याशी महेश केवट के रूप में मैदान में उतारकर कांग्रेस की चिंताएं बढ़ा दी हैं तो वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन के नामांकन पर भी बीजेपी ने आपत्ति लगाई है। बीजेपी का आरोप है कि कांग्रेस प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन ने नामांकन पत्र में तेलंगाना की एक कोर्ट में चल रहे मामले की जानकारी छिपाई है, इसलिए मीनाक्षी नटराजन का नामांकन निरस्त किया जाए।

बीजेपी ने जताई आपत्ति, कांग्रेस बोली-आपत्ति निराधार – एक तरफ जहां बीजेपी ने कांग्रेस प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन के नामांकन को लेकर आपत्ति जताते हुए नामांकन निरस्त करने की मांग की है। तो वहीं मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने बीजेपी की आपत्ति को निराधार बताया है। बीजेपी का आरोप है कि नामांकन पत्र में मीनाक्षी नटराजन ने तेलंगाना की एक कोर्ट में चल रहे मामले की जानकारी छिपाई है, इस पर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का कहना है कि नटराजन के खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है, बल्कि उन्हें कोर्ट से केवल एक नोटिस मिला है।

रिटर्निंग ऑफिसर के कमरे के बाहर हंगामा – बीजेपी के द्वारा मीनाक्षी नटराजन के नामांकन पर आपत्ति जताए जाने की सूचना मिलते ही कांग्रेस के कुछ विधायक भी रिटर्निंग ऑफिसर के दफ्तर में पहुंच गए। कांग्रेस विधायकों ने रिटर्निंग ऑफिसर के दफ्तर के बाहर ही हंगामा करते हुए विरोध जताया और इस दौरान उन्होंने नारेबाजी करते हुए विधायक हेमंत कटारे और विक्रांत भूरिया ने दफ्तर में घुसने की कोशिश भी की, जिन्हें वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने रोका। जिसके कारण कुछ देर तक रिटर्निंग ऑफिसर के दफ्तर के बाहर हंगामा होता रहा।

राज्यसभा की तीसरी सीट को लेकर घमासान – बता दें कि मध्यप्रदेश में राज्यसभा की तीसरी सीट के लिए सियासी घमासान मचा हुआ है। संख्या गणित के हिसाब से तो तीसरी सीट कांग्रेस की नजर आ रही है लेकिन भाजपा ने तीसरी सीट पर महेश केवट को उम्मीदवार बनाया है। तीसरी सीट पर अब कांग्रेस की मीनाक्षी नटराजन और भाजपा के महेश केवट के बीच मुकाबला होगा। भाजपा पार्टी के पास अभी तीसरे उम्मीदवार के लिए 48 वोट हैं और तीसरे उम्मीदवार महेश केवट को जिताने के लिए भाजपा को 10 विधायकों के वोटों की जरुरत है, ऐसे में संभावना है कि कांग्रेस विधायकों से क्रॉस वोटिंग कराई जा सकती है। क्रॉस वोटिंग के डर से कांग्रेस अपने सभी विधायकों को परिवार सहित कर्नाटक भेज रही है जहां वो 17 जून तक रिसॉर्ट में रहेंगे और फिर 18 जून को आकर सीधे राज्यसभा उम्मीदवार के लिए वोटिंग करेंगे।

ग्रीनको प्रोजेक्ट में हादसा, कार्य के दौरान 7 मजदूर घायल : प्रशासन ने मांगी सेफ्टी ऑडिट रिपोर्ट

खिमला स्थित प्रोजेक्ट का एसडीएम व अधिकारियों ने किया निरीक्षण, एक सप्ताह में रिपोर्ट सौंपने के निर्देश

नीमच। खिमला स्थित ग्रीनको प्रोजेक्ट में प्लांट में ऊंचाई पर पाइपलाइन का काम कर रहे मजदूर लिफ्ट सहित नीचे गिर गए, जिससे 7 मजदूर घायल हो गए। घटना के बाद प्रोजेक्ट क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। घायलों को तत्काल उपचार के लिए नीमच निजी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है।

घटना की जानकारी मिलते ही एसडीएम किरण आंजना, पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने प्रोजेक्ट प्रबंधन से हादसे के कारणों, सुरक्षा व्यवस्थाओं तथा घायल मजदूरों की स्थिति के संबंध में जानकारी ली। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार प्रोजेक्ट में निर्माण कार्य के दौरान अचानक हुए हादसे में मजदूर इसकी चपेट में आ गए, जिससे कई श्रमिक घायल हुए। प्रशासन ने घटना को गंभीरता से लेते हुए सुरक्षा मानकों की जांच के निर्देश दिए हैं।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने प्रोजेक्ट प्रबंधन को एक सप्ताह के भीतर संपूर्ण सेफ्टी ऑडिट करवाकर उसकी रिपोर्ट प्रशासन को प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि रिपोर्ट मिलने के बाद पूरे मामले की विस्तृत जांच की जाएगी और यदि किसी प्रकार की लापरवाही या सुरक्षा नियमों की अनदेखी सामने आती है तो संबंधितों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

घटना के बाद श्रमिकों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी सवाल खड़े हुए हैं। प्रशासन का कहना है कि बड़े निर्माण एवं औद्योगिक प्रोजेक्ट्स में कार्यरत मजदूरों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इस मामले में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मध्य प्रदेश के संविदा कर्मचारियों को बड़ी सौगात, मानदेय में 4.46% की बढ़ोतरी, आदेश जारी

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार ने प्रदेश के विभिन्न विभागों में कार्यरत संविदा अधिकारी-कर्मचारियों के पारिश्रमिक में 4.46 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की है। यह वृद्धि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई इंडेक्स) के आधार पर की गई है। वित्त विभाग ने सोमवार को इस संबंध में आदेश जारी कर सभी विभागों को सूचित कर दिया।

समान वार्षिक संशोधन के रूप में दी जाती है – यह बढ़ोतरी महंगाई भत्ते के समान वार्षिक संशोधन के रूप में दी जाती है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2025 में संविदा कर्मचारियों के पारिश्रमिक में 2.94 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी, जबकि इस बार बढ़ोतरी का प्रतिशत बढ़ाकर 4.46 कर दिया गया है।

समान महंगाई भत्ता मिलना चाहिए – मध्य प्रदेश संविदा कर्मचारी अधिकारी महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश राठौड़ ने कहा कि लगातार बढ़ती महंगाई को देखते हुए संविदा कर्मचारियों को भी नियमित कर्मचारियों के समान महंगाई भत्ता मिलना चाहिए। उनका कहना है कि संविदा कर्मचारी भी नियमित कर्मचारियों की तरह समान कार्य करते हैं, इसलिए उन्हें भी समान लाभ मिलना चाहिए। वित्त विभाग के आदेश के बाद बढ़ी हुई राशि संबंधित संविदा अधिकारी-कर्मचारियों को नियमानुसार प्रदान की जाएगी।

झूठी एफआईआर दर्ज कराने का आरोप, ब्राह्मण समाज ने एसपी को सौंपा ज्ञापन

नीमच। ब्राह्मण समाज ने एक व्यक्ति को कथित रूप से झूठे प्रकरण में फंसाने और उसके पहचान संबंधी दस्तावेजों के दुरुपयोग के आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है। समाजजनों का कहना है कि आर्थिक विवाद के बाद सुनियोजित तरीके से शिकायत दर्ज कराकर व्यक्ति को परेशान करने का प्रयास किया गया है। ज्ञापन के अनुसार कुकड़ेश्वर निवासी कन्हैयालाल पुरोहित का गैस एजेंसी संचालन से जुड़े लोगों के साथ व्यावसायिक संबंध रहा है। इसी दौरान उनके आधार कार्ड, फोटो एवं अन्य दस्तावेज संबंधित पक्ष के पास पहुंचे थे। बाद में आर्थिक लेन-देन को लेकर विवाद उत्पन्न होने पर इन दस्तावेजों के कथित दुरुपयोग की आशंका जताई गई है।

समाजजनों ने आरोप लगाया कि शिकायतकर्ता की जानकारी और सहमति के बिना उसके दस्तावेजों का उपयोग कर झाबुआ जिले में उसके खिलाफ झूठी एफआईआर दर्ज करवाई गई। ज्ञापन में कहा गया कि पूरे मामले की जांच किए बिना किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा, इसलिए निष्पक्ष एवं पारदर्शी जांच कराई जाना आवश्यक है।

ब्राह्मण समाज ने मांग की है कि मामले की जांच किसी वरिष्ठ अधिकारी से कराई जाए तथा संबंधित व्यक्तियों के मोबाइल रिकॉर्ड, डिजिटल साक्ष्य और दस्तावेजों की तकनीकी जांच कर वास्तविक तथ्यों को सामने लाया जाए। साथ ही यदि जांच में दस्तावेजों के दुरुपयोग या झूठी शिकायत दर्ज कराने की पुष्टि होती है तो दोषियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए।

समाज के प्रतिनिधियों ने शिकायतकर्ता एवं उसके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग भी उठाई। उनका कहना है कि मामले की निष्पक्ष जांच होने से सच्चाई सामने आएगी और न्याय प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास मजबूत होगा।

10 वर्षीय विभूति की हनुमान चित्रकला ने जीता दिल समाजसेवी अशोक अरोरा ने माथे से लगाकर किया सम्मान

नीमच। प्रतिभा, संस्कार और श्रद्धा जब एक साथ मिलते हैं तो वे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं। ऐसा ही भावुक और प्रेरणादायक दृश्य शहर में उस समय देखने को मिला, जब 10 वर्षीय बालिका विभूति शर्मा द्वारा बनाई गई भगवान श्री हनुमानजी की सुंदर चित्रकला को वरिष्ठ समाजसेवी अशोक अरोरा ने अपने माथे से लगाकर उसकी कला, भावना और संस्कारों का सम्मान किया। जानकारी के अनुसार विभूति शर्मा प्रतिदिन की तरह अपने साथियों के साथ खेलने के लिए घर से निकली थीं। इसी दौरान उनकी मुलाकात समाजसेवी अशोक अरोरा से हुई। विभूति ने उन्हें रुकने का आग्रह किया और कहा कि वह उनके लिए एक विशेष उपहार लेकर आती हैं। कुछ ही देर बाद वह अपने हाथों से बनाई भगवान श्री हनुमानजी की आकर्षक पेंटिंग लेकर लौटीं और उसे समाजसेवी अशोक अरोरा को भेंट किया।

पांचवीं कक्षा में अध्ययनरत विभूति शर्मा अधिवक्ता दर्शन शर्मा एवं कल्याणी शर्मा की पुत्री हैं। वह श्री किलेश्वर महादेव मंदिर, नीमच के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहलवानी से नीमच का नाम रोशन करने वाले वरिष्ठ पहलवान राजेन्द्र शर्मा की पौत्री हैं। विभूति ने अपने कोमल हाथों से भगवान श्री हनुमानजी का मनमोहक चित्र बनाकर अपनी विलक्षण कला प्रतिभा का परिचय दिया। चित्र पर अंकित "जय श्री राम" शब्द उसकी धार्मिक आस्था, भारतीय संस्कृति और सनातन मूल्यों के प्रति गहरे लगाव को दर्शाते हैं। इस अवसर पर समाजसेवी अशोक अरोरा ने कहा कि इस भावपूर्ण चित्र को देखकर उनका मन श्रद्धा और स्नेह से भर गया। यह

केवल एक पेंटिंग नहीं, बल्कि एक बालिका के निश्छल हृदय से निकली भक्ति, संस्कार और भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण का जीवंत प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में जब अधिकांश बच्चे मोबाइल और आधुनिक उपकरणों में व्यस्त रहते हैं, ऐसे समय में विभूति जैसी बाल प्रतिभाएं कला, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को जीवंत बनाए हुए हैं, जो समाज के लिए गर्व का विषय है।

सिंहस्थ-2028 की तैयारियों में जुटी नीमच पुलिस, दूसरे प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ

एसपी राजेश व्यास ने पुलिसकर्मियों को दिया मार्गदर्शन, भीड़ नियंत्रण से आपदा प्रबंधन तक दिया जा रहा विशेष प्रशिक्षण

नीमच। आगामी सिंहस्थ-2028 महापर्व की तैयारियों को लेकर नीमच पुलिस ने प्रशिक्षण गतिविधियों को गति दे दी है। इसी क्रम में सोमवार को पुलिस कंट्रोल रूम स्थित सभाकक्ष में आयोजित द्वितीय पुलिस प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास ने किया। इस दौरान उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया।

कार्यक्रम में एसपी राजेश व्यास ने प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पुलिसकर्मियों से संवाद कर सिंहस्थ महापर्व के दौरान आने वाली चुनौतियों, व्यवस्थाओं और पुलिस की जिम्मेदारियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि सिंहस्थ जैसे विशाल धार्मिक आयोजन में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ श्रद्धालुओं की सुरक्षा, यातायात संचालन और आपातकालीन परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटना पुलिस की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है।

उन्होंने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम पुलिस बल को व्यावहारिक परिस्थितियों के अनुरूप तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रशिक्षित, अनुशासित और संवेदनशील पुलिस बल ही किसी बड़े आयोजन के सफल संचालन की आधारशिला होता है।

पुलिस विभाग के अनुसार जिले के समस्त पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को 1 जून से 31 दिसंबर 2026 तक

चरणबद्ध तरीके से विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान भीड़ प्रबंधन, यातायात व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, संचार समन्वय तथा आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी जा रही है।

गौरतलब है कि प्रशिक्षण श्रृंखला का पहला सत्र 1 जून से 6 जून तक आयोजित किया गया था, जिसमें 50 पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को सिंहस्थ-2028 के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित पुलिसकर्मियों द्वारा पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। दूसरे चरण के प्रशिक्षण में भी पुलिस बल को व्यवहारिक और तकनीकी दोनों स्तरों पर दक्ष बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

एसपी राजेश व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान और अनुभवों का अधिकतम उपयोग करने तथा भविष्य में उन्हें व्यवहारिक रूप से लागू करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सिंहस्थ जैसे विश्वस्तरीय आयोजन में पुलिस की तैयारियां जितनी मजबूत होंगी, आयोजन उतना ही सुरक्षित और व्यवस्थित होगा। कार्यक्रम में रक्षित निरीक्षक विक्रम सिंह भदौरिया, सूबेदार सुरेश सिसोदिया सहित प्रशिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

4 घंटे से ज्यादा समय 'बिजली गुल' तो उपभोक्ताओं को मिलेगा मुआवजा

भोपाल । बिजली लंबे समय तक बंद हो रही है और शिकायत करने पर भी बहाली नहीं हो पा रही है तो बिजली अधिनियम आपको अघोषित बिजली कटौती पर मुआवजा लेने का हक देता है। अभी इलेक्ट्रिसिटी अमेंडमेंट एक्ट 2025 में तो मुआवजा ऑटोमेटिक कर दिया जाएगा। यानी लंबे समय तक बिजली गुल होती है तो खुद ही मुआवजा उपभोक्ता के बिल क्रेडिट में जोड़ दिया जाएगा। यदि चार घंटे से अधिक समय तक बिजली आपूर्ति बिना पूर्व सूचना के बंद रहती है तो अभी उपभोक्ता फोरम से मुआवजा की मांग कर सकते हैं। 45 दिन में शिकायत का निवारण करना होगा।

अभी ऐसी स्थिति – अभी विद्युत (उपभोक्ता अधिकार) नियम, 2020 के तहत बिजली कंपनियों ने अघोषित या तय सीमा से ज्यादा बिजली कटौती पर उपभोक्ताओं को हर्जाना देने का प्रावधान तय किया है। सामान्य फॉल्ट जैसे फ्यूज उडना या तार टूटना को 1 से 3 घंटे के भीतर ठीक करना होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में 4 घंटे का समय तय है। ट्रांसफार्मर जलने पर 12 घंटे में आपूर्ति का समय है। प्रतिघंटा 25 रुपए से 100 रुपए तक है। नए इलेक्ट्रिसिटी (अमेंडमेंट) बिल, 2025 और राष्ट्रीय विद्युत नीति 2026 में इस व्यवस्था को और स्पष्ट बनाया जा रहा है। नए संशोधन बिल की धारा 58 में संशोधन के तहत बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और बहाली की बेसलाइन तय की जा रही है। स्मार्ट मीटर में क्षेत्र की बिजली कटौती का डेटा सीधे सिस्टम में दर्ज होगा। ग्रामीण इलाकों में 4 घंटे और शहरों में 2 घंटे के भीतर बिजली नहीं आई, तो स्वतः मुआवजा मिलना शुरू हो जाएगा, जो सीधे उनके बिजली खाते या अगले बिल में क्रेडिट होगा।

कंगाली में आटा गीला का सामना करती ममता बनर्जी

मनोज कुमार अग्रवाल

ममता बनर्जी की बढ़ती परेशानियों की वजह ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस अपने 28 साल के इतिहास के सबसे बड़े आंतरिक संकट से जूझ रही है। पार्टी के 58 विधायकों ने बागी रुख अपनाते हुए निष्कासित नेता ऋतब्रत बनर्जी को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष चुन लिया है, जिसे विधानसभा स्पीकर ने मंजूरी भी दे दी है। इसके साथ ही, लगभग 20 से अधिक टीएमसी सांसदों के भी भाजपा के संपर्क में होने की खबरें सामने आ रही हैं।

आपने एक पुरानी कहावत तो जरूर सुनी होगी कंगाली में आटा गीला। यह ममता बनर्जी के साथ बिल्कुल खरी साबित हो रही है एक ओर वह सत्ता से बाहर हो गयीं हैं दूसरे ओर उनके अपने ही उनके खिलाफ मुखर हो गएं हैं।

आपको बता दें पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की राजनीतिक और कानूनी परेशानियां मई 2026 में हुए विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस की हार के बाद से लगातार बढ़ रही हैं। पार्टी के भीतर बड़ी बगावत और कानूनी मुकदमों ने उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

ममता बनर्जी की बढ़ती परेशानियों की वजह ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस अपने 28 साल के इतिहास के सबसे बड़े आंतरिक संकट से जूझ रही है। पार्टी के 58 विधायकों ने बागी रुख अपनाते हुए निष्कासित नेता ऋतब्रत बनर्जी को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष चुन लिया है, जिसे विधानसभा स्पीकर ने मंजूरी भी दे दी है। इसके साथ ही, लगभग 20 से अधिक टीएमसी सांसदों के भी भाजपा के संपर्क में होने की खबरें सामने आ रही हैं।

पार्टी पर पकड़ ढीली होने का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि संकट के बीच ममता बनर्जी द्वारा बुलाई गई हाई-लेवल बैठक में 80 में से केवल 8 विधायक और 41 में से सिर्फ 6 सांसद ही शामिल हुए। ज्यादातर निर्वाचित प्रतिनिधियों ने इस बैठक से दूरी बना ली, जो उनके नेतृत्व को एक सीधा चैलेंज माना जा रहा है।

राजनीतिक मोर्चे के साथ-साथ ममता बनर्जी अब कानूनी पचड़े में भी फंस गई हैं। चुनाव के दौरान दिए गए उनके बयानों और बांग्लादेश में हुई राजनीतिक हत्या के मामले को केंद्र सरकार से जोड़ने को लेकर उनके खिलाफ सिलीगुड़ी और कोलकाता में राजद्रोह और हेट स्पीच की शिकायतें व पुलिस रिपोर्ट दर्ज कराई गई हैं। याचिकाकताओं ने इसे देश की संप्रभुता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया है।

सत्ता हाथ से जाने के बाद जमीनी स्तर पर भी भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण भगदड़ मची हुई है। उनके बेहद करीबी माने जाने वाले कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम और बिधाननगर की मेयर कृष्णा चक्रवर्ती ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया है। इसके अलावा राज्यभर में 100 से ज्यादा टीएमसी पार्षदों और स्थानीय नेताओं ने पार्टी छोड़ दी है।

ममता बनर्जी को अपने ही गढ़ भवानीपुर सीट से भाजपा के सुवेंदु अधिकारी के हाथों 15,105 वोटों से हार का सामना करना पड़ा। राज्य में 15 साल पुराने टीएमसी शासन का अंत हो गया है और सुवेंदु अधिकारी के नेतृत्व में भाजपा की नई

सरकार का गठन हो चुका है।

ममता बनर्जी इन सभी विपरीत हालातों के खिलाफ सड़कों से लेकर हाइकोर्ट तक कानूनी और राजनीतिक लड़ाई लड़ रही हैं।

आपको पता है कि पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव के परिणाम एक माह पूर्व 4 मई को सामने आए थे। इनमें ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस को निराशा का मुंह देखना पड़ा था। 294 सीटों वाली इस विधानसभा में उसे 80 सीटें ही मिली थीं। इस तरह 15 वर्ष तक प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं ममता का शासन खत्म हो गया था। ममता ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत कांग्रेस से की थी। लम्बी अवधि तक वह इसके साथ जुड़ी रहीं, परन्तु 28 वर्ष पूर्व 1998 में उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) का गठन किया था और कम्युनिस्ट पार्टियों के तीन दशकों से भी अधिक प्रदेश में चले आ रहे लम्बे शासन को खत्म करने के लिए बड़ी दिलेरी और दृढ़ता से उसका मुकाबला किया था। इस समय लोकसभा में इनके 28 और राज्यसभा में 13 सांसद हैं, परन्तु विगत लम्बी अवधि से इस पार्टी के भीतर ममता की तानाशाही और टकराव वाली नीतियों के कारण असंतोष और असहमति चल रही थी, परन्तु उनकी प्रशासन पर सख्त पकड़ और कठोर फैसलों से यह बगावत अंदर-अंदर ही सुलगती रही थी।

ममता ने अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी को अपने साथ राजनीति में लाकर उसे अधिक शक्तियां दे दी थीं। बनर्जी के काम करने के ढंग-तरीके से भी पार्टी गलियारों में असंतोष था, जिसके संबंध में ममता को लगातार उनकी पार्टी के नेताओं द्वारा अवगत करवाया जाता रहा था परन्तु ममता ने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया। अपनी ताकत के दम पर उन्होंने बड़ी राष्ट्रीय नेता होने का भ्रम भी पाल लिया था, जिस कारण राष्ट्रीय स्तर पर दर्जनों ही पार्टियों द्वारा बनाए गए इंडिया गठबंधन की वह सदस्य जरूर बनी रही थीं, परन्तु इसमें शामिल अलग-अलग पार्टियों के सभी नेताओं से ऊंचा कद होने का भ्रम उन्होंने पाल रखा था। इसलिए विधानसभा चुनाव से पहले उन्होंने अपनी किसी भी सहयोगी पार्टी के साथ गठबंधन करने से इन्कार कर दिया था। उनके शासन के समय प्रदेश की आर्थिकता भी बेहद कमजोर हो गई थी और यह पूरी तरह कर्ज में डूब चुका था। केन्द्र के साथ लगातार टकराव रहने के कारण और उद्योग को समर्थन न मिलने के कारण प्रदेश की आर्थिकता डावांडोल हो गई थी। इसके साथ ही बेरोजगारी की दर भी बढ़ चुकी थी, परन्तु पिछला पूरा समय केन्द्र और अन्य पार्टियों के साथ टकराव बने रहने के कारण भी उनकी प्रशासनिक तौर पर पकड़ ढीली पड़ चुकी थी। ऐसी स्थिति लोगों के भीतर निराशा में बदलती गई। लगातार सरकार विरोधी भावनाओं के बढ़ने का अनुमान लगाने में वह असमर्थ रहीं और न ही वह दीवार पर लिखे को पढ़ सकीं, जिस कारण उन्हें चुनाव में निराशा का मुंह देखना पड़ा। हार के बाद भी उन्होंने खुले मन से आत्म-मंथन करने की बजाए अपनी पार्टी के भीतर असंतोष को अनदेखा किए रखा जो अंत में उनके लिए हानिकारक सिद्ध हुई। आंतरिक यह चिंगारी उस समय लपटें बन गई, जब उन्होंने ज्यादातर पार्टी नेताओं को अनदेखा करके अभिषेक बनर्जी के कहने पर विधानसभा में विपक्ष के नेता के लिए सैमन देव का नाम स्पीकर को भेज दिया, परन्तु ज्यादातर विधायक इस पद के लिए रिताव्रता बनर्जी के पक्ष में थे, परन्तु ममता ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और इस पद के लिए स्पीकर को विधायकों के हस्ताक्षर वाला एक पत्र भेज दिया, जिस कारण ज्यादातर नेताओं ने बगावत का मार्ग अपना लिया। इस मामले को लेकर ही बुधवार को पार्टी के 80 विधायकों में से 59 विधायकों ने विधानसभा के स्पीकर से सम्पर्क किया। अपने हस्ताक्षरों वाला पत्र उन्हें सौंपा और अपने गुट को असली तृणमूल कांग्रेस बताया। पार्टी के 28 वर्ष के के इतिहास में ममता पर पहली बार इतना बड़ा हमला हुआ है। इसकी उदाहरण महाराष्ट्र से मिलती है, जब 20 जून, 2022 को वहां शिव सेना के 55 में से 40 विधायकों ने एकनाथ शिंदे का उस समय साथ दिया था, जब उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री थे। उसके सप्ताह भर बाद ही शिंदे वहां भाजपा के समर्थन से मुख्यमंत्री बन गए थे। अब दो तिहाई सदस्यों के एकजुट होने से विधानसभा में ममता के समर्थक सदस्य 2 दर्जन से भी कम रह गए हैं, जिससे उनकी राजनीतिक हालत और भी दयनीय हो गई प्रतीत होती है।

दूसरी तरफ भाजपा को बड़ी जीत प्राप्त होने के कारण उसके नेताओं ने तृणमूल कांग्रेस के बागियों के साथ कोई भी समझौता करने से इंकार कर दिया है। रिताव्रता बनर्जी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत वामपंथी विद्यार्थी संगठन से की थी। 34 वर्ष की उम्र में वह राज्यसभा के सदस्य बन गए थे और बाद में वह टी.एम.सी. में शामिल हो गए थे। ममता ने ही उन्हें वर्ष 2024 में राज्यसभा में भेजा था। विधानसभा चुनाव में वह उलबेरिया सीट से विधायक चुने गए हैं। चाहे ममता ने इस बड़ी चुनौती के समक्ष भी अपना हौसला कायम रखते हुए इन बागियों और भाजपा को ललकारा है। इसके साथ ही उन्होंने भाजपा विरोधी पार्टियों से सम्पर्क करने की बात भी की है, परन्तु अब यह देखना शेष होगा, कि वह निकट भविष्य में प्रदेश और देश की राजनीति में किस तरह विचरण करेंगी।स्पष्ट है कि आज की राजनीति में साम दाम दंड भेद सब का चलन बढ़ गया है सत्ता में सबको समेट रखने की ताकत है लेकिन सत्ता से बाहर होते ही अपने सगे साथियों की हकीकत सामने आ जाती है कि उनके दिल में कितना खार छुपाए बैठे थे यह बदलते दौर की राजनीति की नंगी तस्वीर है इस को स्वीकार करना ही होगा।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

युद्ध खत्म होगा या नहीं?

युद्धविराम और समझौते की कथित बातचीत के बावजूद राष्ट्रपति ट्रंप ने हुंकार भरी है कि ईरान 21 दिन में खत्म हो जाएगा। वह सब कुछ तबाह कर देंगे। फिर ट्रंप युद्धविराम की नई परिभाषा देते हुए कहते हैं कि सीमित और संयमित गोलीबारी युद्धविराम ही है। कमोबेश बमबारी, मिसाइलों की बौछार और विनाशक हमले तो बंद हैं। अमरीकी राष्ट्रपति किन 21 दिनों की बात कर रहे हैं? 8 अप्रैल से तो कथित युद्धविराम है। अब शांति-समझौता करना चाहते हैं अथवा युद्ध आगे भी जारी रह सकता है? दूसरी तरफ ईरान के आईआरजीसी ने कुवैत और बहरीन के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर हमले कर तबाही मचा दी है। इन्हें अमरीकी सैन्य ठिकाने भी माना जाता है। कुवैत हवाई अड्डे का टर्मिनल-1 तो विनष्ट हो गया। वहां एक भारतीय (उज्जैन निवासी) मारा गया और 13 घायल हुए हैं। अन्य घायलों का आंकड़ा बहुत ज्यादा है। ईरान ने एक ही रात में चार देशों पर हमले कर अमरीकी पक्ष को थर्रा दिया है। ईरानी नौसेना ने ओमान खाड़ी में अमरीकी युद्धपोत पर हमला कर उसे क्षतिग्रस्त किया है। अमरीका के कान खड़े हो गए होंगे! युद्ध के सायरन बजने लगे हैं। लड़ाकू विमान आसमान में मंडराने, गरजने लगे हैं। राष्ट्रपति ट्रंप एक तरफ समझौते को लेकर उम्मीद जताते हैं, तो दूसरी तरफ तबाही की धमकियां देते हैं! यह युद्धविराम कैसा है अथवा ईरान युद्ध का दूसरा चरण शुरू हो चुका है? इसी बीच अमरीकी कांग्रेस (संसद) की प्रतिनिधि सभा ने प्रस्ताव पारित किया है कि ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान रोका जाए और सैनिकों की वापसी शुरू की जाए। प्रस्ताव में यह निर्देश भी है कि यदि भविष्य में युद्ध की कार्रवाई अपरिहार्य हो, तो पहले कांग्रेस (संसद) की मंजूरी ली जाए। प्रस्ताव के पक्ष में 215 और उसके खिलाफ 208 वोट आए। राष्ट्रपति ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी के 4 सांसदों ने भी क्रॉस वोटिंग की और डेमोक्रेट्स का समर्थन किया। इससे पहले सीनेट में भी ट्रंप-समर्थक सांसदों ने उनके खिलाफ वोट दिए थे। संसद में पारित प्रस्ताव के जरिए राष्ट्रपति की निरंकुश युद्ध-शक्तियों को भी सीमित किया गया है। यह घटनाक्रम और परिदृश्य राष्ट्रपति ट्रंप के लिए राजनीतिक और संसदीय आघात से कम नहीं है। फिर भी राष्ट्रपति ट्रंप पारित प्रस्ताव को 'असंवैधानिक' करार देते हुए 'वीटो' कर सकते हैं, लेकिन वह राष्ट्रपति और संसद के बीच टकराव की नौबत से बचना चाहेंगे।

चिंतन-मनन

मृत्यु के उपरांत शरीर नष्ट हो जाता है

अष्टावप्र गीता में आचार्य अष्टावक्र कहते हैं कि मनुष्य शरीर मात्र शरीर नहीं है। वह चैतन्य आत्मा है। आत्मा ही इस शरीर की पोषक है। जैसे ही आत्मा इस शरीर से बाहर निकलती है, शरीर विकृत होने लगता है। बुद्धि, कर्म, भोग, अहंकार, लोभ, मोह शरीर और मन के धर्म हैं, आत्मा के नहीं। आत्मज्ञान के अभाव में ऐसी भ्रांति हुआ करती है कि मैं एक शरीर हूं, आत्मा नहीं। यही तो अज्ञान है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पांच तत्वों से मिलकर शरीर बनता है, जो भौतिक, अनित्य और नष्ट होने वाला है।

मृत्यु के उपरांत शरीर नष्ट हो जाता है, पर हम शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी अगली यात्र पर निकल जाते हैं। जैसे पुराने वस्त्रों को छोड़कर नया वस्त्र धारण कर लेते हैं। यह शरीर हमारा वस्त्र मात्र है, जो भौतिक पदार्थों से मिलकर बना है। हम सब घर नहीं, बल्कि इसमें रहने वाले मालिक हैं। हम बार-बार यह कहते हैं कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, जो चैतन्य है। आत्मा का कोई वर्ण नहीं होता, वह ब्राण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नहीं होती। वह तो चैतन्य-शक्ति मात्र है, जो समस्त प्रकार के जीवों में समान रूप से व्याप्त है। यह आत्मा न किसी वर्ण वाली है और न आश्रम वाली है। आत्मा की न कोई जाति होती है और न ही कोई धर्म होता है। ये चार आश्रम-ब्राचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास वाली भी नहीं है। आत्मा न कर्ता है और न भोक्ता है और न ही भोग्य विषय है। इन तीनों से परे असंग, निराकार और साक्षी मात्र है। 1कुछ लोग कहते हैं कि यह घोर कलयुग है, यह पंचम काल है। इसमें तो मुक्ति हो ही नहीं सकती। इस संदर्भ में आचार्य अष्टावप्र कहते हैं कि तुम अपने को चैतन्य में स्थिर कर लो तो अभी मुक्ति को प्राप्त हो सकते हो। जैसे दीपक जलते ही अंधेरा गायब हो जाता है, उसी तरह क्या आत्मज्ञान के प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार गायब नहीं हो सकता। अज्ञान के मिटते ही जीव की सभी भ्रांतियां मिट जाती हैं। आत्मा चैतन्य है, मुक्ति है, सर्वत्र व्यापक है, वह किसी बंधन में बंधी नहीं है। आत्मा का कोई रूप नहीं है, वह निराकार है। उसी निराकार का रूप सृष्टि है। आकार बनते हैं, बिगड़ते हैं, किंतु मूल तत्व वही रहता है। जैसे सोने से विभिन्न आभूषण बनते हैं, बिगड़ते हैं, किंतु मूल तत्व सोना वही रहता है। इस तरह से हम कह सकते हैं, आत्मा ही सत्य है और आत्मा ही पुरातन है, आत्मा ही सनातन है।

रामपुरा में बाढ़ राहत मॉकड्रिल सम्पन्नः एसडीआरएफ ने जलाशय किनारे किया रेस्क्यू प्रदर्शन, आपदा प्रबंधन सामग्री का हुआ प्रदर्शन

नीमच। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के निर्देशन में सोमवार को रामपुरा स्थित गांधी सागर जलाशय के किनारे बाढ़ राहत एवं आपदा प्रबंधन मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। इस दौरान अपर कलेक्टर बी.एस. कलेश की उपस्थिति में एसडीआरएफ नीमच की टीम द्वारा आपदा की स्थिति में राहत एवं बचाव कार्यों का सजीव प्रदर्शन किया गया।

मॉक ड्रिल के दौरान होमगार्ड विभाग द्वारा बाढ़ एवं आपदा राहत सामग्री की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें ग्रामीणों को घरेलू संसाधनों जैसे मटके, पानी के केन, टीन के डिब्बे तथा प्लास्टिक बोतलों से बनाए जाने वाले बचाव उपकरणों की जानकारी दी गई।

होमगार्ड कमांडेंट युवराज सिंह एवं पुष्पा पंवार ने आपदा प्रबंधन उपकरणों के उपयोग की विस्तृत जानकारी दी।

एसडीआरएफ टीम द्वारा जलाशय में नाव डूबने की स्थिति में राहत एवं बचाव कार्य तथा घायलों को प्राथमिक उपचार देने का डेमो भी प्रस्तुत किया गया, जिसे देखकर उपस्थित ग्रामीणों एवं अधिकारियों ने सराहना की।

अपर कलेक्टर कलेश ने उपस्थित नागरिकों को आपदा प्रबंधन पुस्तिका का वितरण किया तथा अधिकारियों के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

इस अवसर पर एसडीएम किरण आंजना, तहसीलदार मुकेश निगम, मृगेन्द्र सिसोदिया, जनपद सीईओ आरिफ खान सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, कोटवार, सरपंच एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

6 दिन में ट्रैक्टर बरामद, चोरी का खुलासा, दोनों आरोपी गिरफ्तार, पूछताछ में हो सकते हैं और बड़े खुलासे

मनासा। जिले में संपत्ति संबंधी अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत कंजार्डा चौकी पुलिस ने ट्रैक्टर चोरी के मामले का खुलासा करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने चोरी गया मेसी फर्गुसन 1035 ट्रैक्टर एवं वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद कर कुल 9.50 लाख रुपये का मशरूका जब्त किया है। दोनों आरोपियों से पूछताछ जारी है, जिससे चोरी और अन्य वारदातों से जुड़े अहम खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नवल सिंह सिसोदिया एवं एसडीओपी निकिता सिंह के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी निलेश अवस्थी तथा चौकी प्रभारी श्याम कुमावत के नेतृत्व में पुलिस टीम ने यह सफलता हासिल की।

जानकारी के अनुसार 27-28 मई 2026 की दरमियानी रात अज्ञात बदमाशों ने फरियादी का लाल रंग का मेसी फर्गुसन 1035 ट्रैक्टर चोरी कर लिया था। मामले में 1 जून को थाना मनासा में अपराध क्रमांक 268/26 के तहत धारा 303(2) बीएनएस में प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की गई थी।

विवेचना के दौरान मुखबिर सूचना एवं साइबर टीम की सहायता से पुलिस ने आरोपी अजय पिता गोपाल धाकड़ (21 वर्ष), निवासी चौकड़ी, थाना मनासा को गिरफ्तार किया। पूछताछ के आधार पर पुलिस ने उसके साथी मनीष पिता गोपाल प्रजापत, निवासी बलकुंडी, थाना जावदा, जिला चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) को भी गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों ने ट्रैक्टर चोरी की वारदात में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से करीब 8 लाख रुपये कीमत का मेसी फर्गुसन 1035 ट्रैक्टर तथा वारदात में प्रयुक्त 1.50 लाख रुपये कीमत की एक्सट्रीम मोटरसाइकिल जब्त की है। इस प्रकार कुल 9.50 लाख रुपये का मशरूका बरामद किया गया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार दोनों आरोपियों से गहन पूछताछ की जा रही है। जांच में यह भी पता लगाया जा रहा है कि आरोपियों का किसी अन्य वाहन चोरी गिरोह या पूर्व की वारदातों से कोई संबंध तो नहीं है। पुलिस को उम्मीद है कि पूछताछ के दौरान और भी महत्वपूर्ण खुलासे सामने आ सकते हैं। मामले की विवेचना जारी है तथा पुलिस अन्य संभावित कड़ियों की भी जांच कर रही है।

जावद जनपद अध्यक्ष को हटाने की मांगःकांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुंह पर पट्टी बांधकर किया मौन प्रदर्शन

नीमच । जिले के जावद जनपद पंचायत अध्यक्ष गोपाल चारण को पद से हटाने की मांग को लेकर मंगलवार को जिला मुख्यालय पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मौन प्रदर्शन किया। जावद विधानसभा क्षेत्र के नागरिक और कांग्रेस कार्यकर्ता पंकज तिवारी के नेतृत्व में यह प्रदर्शन कलेक्टोरेट में किया गया।

प्रदर्शन के दौरान पंकज तिवारी ने अपने मुंह पर 'भ्रष्ट कुर्सी पर मौन क्यों?' लिखी पट्टी बांधी हुई थी। उनके हाथों में भारतीय संविधान और मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम-1993 की प्रतियां थीं। इस अनोखे तरीके से उन्होंने प्रशासन का ध्यान अपनी मांग की ओर आकर्षित किया।

कलेक्टर के नाम सौंपे गए ज्ञापन में पंकज तिवारी ने आरोप लगाया कि जनपद पंचायत जावद के अध्यक्ष गोपाल चारण को वर्ष 2023 में लोकायुक्त पुलिस ने कथित रूप से रिश्वत लेते हुए पकड़ा था। इस मामले की जांच और न्यायालयीन प्रक्रिया अभी भी जारी है।

ज्ञापन में कहा गया है कि भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों के बावजूद संबंधित जनप्रतिनिधि का पद पर बने रहना जनहित और लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत है। इससे आम जनता के बीच गलत संदेश जा रहा है और शासन-प्रशासन की निष्पक्षता पर सवाल उठ रहे हैं। कार्यकर्ताओं ने मांग की है कि भ्रष्टाचार से जुड़े गंभीर आरोपों और कोर्ट में प्रकरण विचाराधीन होने के कारण जनपद पंचायत अध्यक्ष के विरुद्ध तुरंत वैधानिक कार्रवाई की जाए और उन्हें पद से मुक्त किया जाए।

इस दौरान मौजूद यश लोहार ने भी भारतीय संविधान और पंचायत राज अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही सर्वोपरि है और भ्रष्टाचार के मामलों में त्वरित, निष्पक्ष व पारदर्शी कार्रवाई आवश्यक है, ताकि लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का विश्वास बना रहे।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज ने कॉकरोच जनता पार्टी के अभिजीत दीपके को बताया बेवकूफ, बनाई अपनी 'इश्क करो पार्टी'

नई दिल्ली । पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। अपनी मांगों को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी ने एक दिन पहले दिल्ली में जंतर-मंतर पर प्रदर्शन भी किया था। के फाउंडर अभिषेक दीपके ने इसका नेतृत्व किया था। युवाओं और लोगों का सपोर्ट भी इस सोशल मीडिया पर बनी नई पार्टी को मिल रहा है। सपोर्ट के साथ ही विरोध का सामना भी इसे करना पड़ रहा है। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज मार्कण्डेय काटजू ने अभिषेक दीपके के विजन को लेकर सवाल खड़े किये हैं। काटजू ने दीपके को बेवकूफ बता दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी पार्टी का भी ऐलान कर दिया। सोशल मीडिया साइट 'X' पार्टी बनाते हुए उन्होंने इसका नाम 'इश्क करो पार्टी' रखा है। जिसका मकसद लोगों में प्यार और भाईचारा बढ़ाना बताया है।

अभिषेक दीपके को काटजू ने क्यों बताया बेवकूफ? - सोशल मीडिया साइट 'X' पर लिखते हुए मार्कण्डेय काटजू ने कहा कि अभिजीत दिपके बेवकूफ हैं, इसका सबूत इस बात से साफ है कि उनकी मुख्य मांगों में से एक भारत के शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा है। उन्होंने आगे लिखा कि अगर धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा देते भी हैं, तो उनकी जगह कोई दूसरा मंत्री ही आएगा। तो फिर इससे क्या फर्क पड़ेगा? काटजू के पोस्ट पर लोगों दोनों तरह के कमेंट कर रहे हैं ,कुछ लोगों ने इस मांग को सही बताया तो कुछ लोगों ने काटजू के बात को सही ठहराया।

क्या है इश्क करो पार्टी? - मार्कण्डेय काटजू ने सोशल मीडिया साइट 'X' पर कई पोस्ट शेयर करते हुए 'इश्क करो पार्टी' की शुरुआत की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जो युवा इस पहल से जुड़ना चाहते हैं, वे पार्टी की आधिकारिक ई-मेल आईडी के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं। काटजू ने स्पष्ट किया कि यह कोई मजाक या केवल प्रेम संबंधों को बढ़ावा देने वाला अभियान नहीं है, बल्कि देश की गंभीर समस्याओं के समाधान की दिशा में एक गंभीर प्रयास है। उन्होंने कहा कि इस पार्टी की आधिकारिक वेबसाइट और इंस्टाग्राम पेज भी जल्द बना लिया जाएगा।

क्या है 'इश्क करो पार्टी' का मकसद? - पूर्व जज मार्कण्डेय काटजू ने कहा कि भारत आज गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, महंगाई, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। उनके अनुसार इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब समाज में व्यापक एकता स्थापित हो पाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि जाति, धर्म और नस्ल के आधार पर समाज को बांटने की राजनीति की वजह से देश की वास्तविक समस्याएं पीछे छूट जाती हैं।

लोगों के भी आ रहे रिएक्शन - इश्क करो पार्टी की घोषणा के बाद सोशल मीडिया पर नई बहस छिड़ गई है। एक ओर जहां कुछ लोग इसे सामाजिक एकता और सद्भाव का संदेश देने वाली पहल मान रहे हैं, वहीं कुछ लोग इसे CJP की लोकप्रियता के जवाब के रूप में देख रहे हैं।

अधिकतर हिन्दुओं के पास अपने ही धर्मग्रंथ को पढ़ने की फुरसत नहीं है। वेद, उपनिषद पढ़ना तो दूर, वे गीता तक को नहीं पढ़ते जबकि गीता को 1 घंटे में पढ़ा जा सकता है। हालांकि कई जगह वे भागवत पुराण सुनने या रामायण का अखंड पाठ करने के लिए समय निकाल लेते हैं या घर में सत्यनारायण की कथा करवा लेते हैं। लेकिन आपको यह जानकारी होना चाहिए कि पुराण, रामायण और महाभारत हिन्दुओं के धर्मग्रंथ नहीं हैं, धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं।

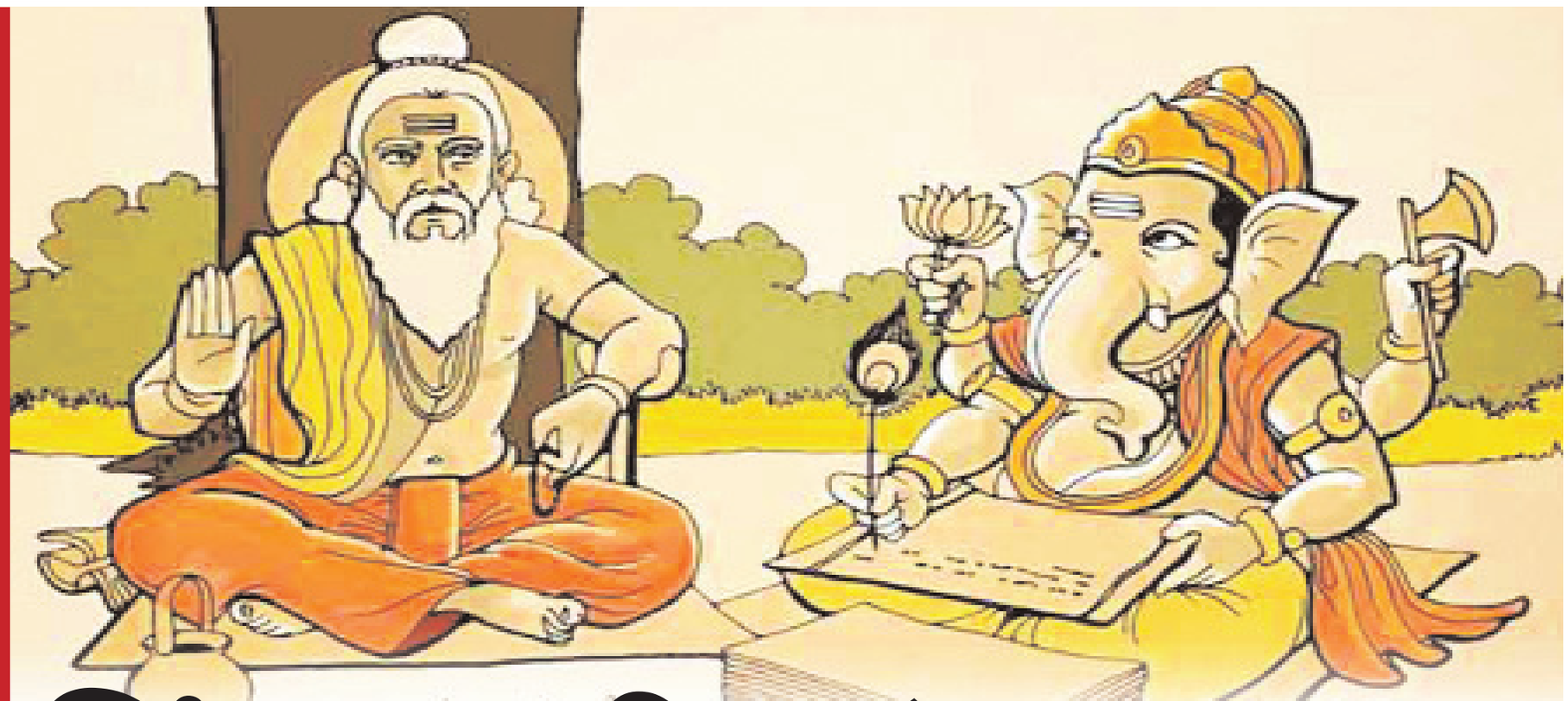

हिंदू धर्मग्रंथों का सार

जानिए किस ग्रंथ में क्या है?

शास्त्रों को 2 भागों में बांटा गया है- श्रुति और स्मृति। श्रुति के अंतर्गत धर्मग्रंथ वेद आते हैं और स्मृति के अंतर्गत इतिहास और वेदों की व्याख?या की पुस्तकें पुराण, महाभारत, रामायण, स्मृतियां आदि आते हैं। हिन्दुओं के धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं। वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गीता है। आओ जानते हैं कि उक्त ग्रंथों में क्या है।

वेदों में क्या है?

वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, इतिहास, संस्कार, रीति-रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है। वेद 4 हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गंधर्व वेद और अथर्ववेद का स्थापत्य वेद ये क्रमश: चारों वेदों के उपवेद बतलाए गए हैं।

ऋग्वेद : ऋक अर्थात स्थिति और ज्ञान। इसमें भौगोलिक स्थिति और देवताओं के आवाहन के मंत्रों के साथ बहुत कुछ है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सौर चिकित्सा, मानस चिकित्सा और हवन द्वारा चिकित्सा आदि की भी जानकारी मिलती है।

यजुर्वेद : यजु अर्थात गतिशील आकाश एवं कर्म। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियां और यज्ञों में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ के अलावा तत्वज्ञान का वर्णन है। तत्वज्ञान अर्थात रहस्यमयी ज्ञान। ब्रम्हांड, आत्मा, ईश्वर और पदार्थ का ज्ञान। इस वेद की 2 शाखाएं हैं- शुक्ल और कृष्ण।

सामवेद : साम का अर्थ रूपांतरण और संगीत। सौम्यता और उपासना। इस वेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय रूप है। इसमें सविता, अग्नि और इन्द्र देवताओं के बारे में जिक्र मिलता है। इसी से शास्त्रीय संगीत और नृत्य का जिक्र भी मिलता है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है। इसमें संगीत के विज्ञान और मनोविज्ञान का वर्णन भी मिलता है।

अथर्ववेद : थर्व का अर्थ है कंपन और अथर्व का अर्थ अकंपन। इस वेद में रहस्यमयी विद्याओं, जड़ी-बूटियों, चमत्कार और आयुर्वेद आदि का जिक्र है। इसमें भारतीय परंपरा और ज्योतिष का ज्ञान भी मिलता है।

उपनिषद क्या है?

उपनिषद वेदों का सार है। सार अर्थात निचोड़ या संक्षिप्त। उपनिषद भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार हैं, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के स्रोत हैं। ईश्वर है या नहीं, आत्मा है या नहीं, ब्रह्मांड कैसा है आदि सभी गंभीर, तत्वज्ञान, योग, ध्यान, समाधि, मोक्ष आदि की बातें उपनिषद में मिलेंगी। उपनिषदों को प्रत्येक हिन्दू को पढ़ना चाहिए। इन्हें पढ़ने से ईश्वर, आत्मा, मोक्ष और जगत के बारे में सच्चा ज्ञान मिलता है।

वेदों के अंतिम भाग को 'वेदांत' कहते हैं। वेदांतों को ही उपनिषद कहते हैं। उपनिषद में तत्वज्ञान की चर्चा है। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 108 है, परंतु मुख्य 12 माने गए हैं, जैसे- 1.ईश, 2.केन, 3.कठ, 4.प्रश्न, 5.मुण्डक, 6.माण्डूक्य, 7.तैत्तिरीय, 8.ऐतरेय, 9.छांदोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11.कौषीतकि और 12.श्वेताश्वतर।

षड्दर्शन क्या है?

गीता में क्या है?

महाभारत के 18 अध्यायों में से 1 भीष्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता में भी कुल 18 अध्याय हैं। 10 अध्यायों की कुल श्लोक संख्या 700 है। वेदों के ज्ञान को नए तरीके से किसी ने व्यवस्थित किया है तो वे हैं भगवान श्रीकृष्ण। अत: वेदों का पॉकेट संस्करण है गीता, जो हिन्दुओं का सर्वमान्य एकमात्र ग्रंथ है। किसी के पास इतना समय ही नहीं है कि वह वेद या उपनिषद पढ़े। उनके लिए गीता ही सबसे उत्तम धर्मग्रंथ है। गीता को बार-बार पढ़ने के बाद ही वह समझ में आने लगती है। गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्ग की चर्चा की गई है। उसमें यम-नियम और धर्म-कर्म के बारे में भी बताया गया है। गीता ही कहती है कि ब्रह्म (ईश्वर) एक ही है। गीता को बार-बार पढ़ेंगे तो आपके समक्ष इसके ज्ञान का रहस्य खुलता जाएगा। गीता के प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रंथ लिखा जा सकता है। गीता में सृष्टि उत्पत्ति, जीव विकास क्रम, हिन्दू संदेशवाहक क्रम, मानव उत्पत्ति, योग, धर्म-कर्म, ईश्वर, भगवान, देवी-देवता, उपासना, प्रार्थना, यम-नियम, राजनीति, युद्ध, मोक्ष, अंतरिक्ष, आकाश, धरती, संस्कार, वंश, कुल, नीति, अर्थ, पूर्व जन्म, जीवन प्रबंधन, राष्ट्र निर्माण, आत्मा, कर्मसिद्धांत, त्रिगुण की संकल्पना, सभी प्राणियों में मैत्रीभाव आदि सभी की जानकारी है। श्रीमद्भगवद्गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी है। इसके प्रत्येक श्लोक में ज्ञानरूपी प्रकाश है जिसके प्रस्फुटित होते ही अज्ञान का अंधकार नष्ट हो जाता है। ज्ञान-भक्ति-कर्म योग मार्गों की विस्तृत व्याख्या की गई है। इन मार्गों पर चलने से व्यक्ति निश्चित ही परम पद का अधिकारी बन जाता है। गीता को अर्जुन के अलावा और संजय ने सुना और उन्होंने धृतराष्ट्र को सुनाया। गीता में श्रीकृष्ण ने 574, अर्जुन ने 85, संजय ने 40 और धृतराष्ट्र ने 1 श्लोक कहा है। उपरोक्त ग्रंथों के ज्ञान का सार बिंदुवार :

ईश्वर के बारे में :

ब्रह्म (परमात्मा) एक ही है जिसे कुछ लोग सगुण (साकार) तो कुछ लोग निर्गुण (निराकार) कहते हैं। हालांकि वह अजन्मा, अप्रकट है। उसका न कोई पिता है और न ही कोई उसका पुत्र है। वह किसी के भाग्य या कर्म को नियंत्रित नहीं करता। न कि वह किसी को दंड या पुरस्कार देता है। उसका न तो कोई प्रारंभ है और न ही अंत। वह अनादि और अनंत है। उसकी उपस्थिति से ही संपूर्ण ब्रह्मांड चलायमान है। सभी कुछ उसी से उत्पन्न होकर अंत में उसी में लीन हो जाता है। ब्रह्ममलीन।

ब्रह्मांड के बारे में :

यह दिखाई देने वाला जगत फैलता जा रहा है और दूसरी ओर से यह सिकुड़ता भी जा रहा है। लाखों सूर्य, तारे और धरतीयों का जन्म है, तो उसका अंत भी। जो जन्मा है वह मरेगा भी। सभी कुछ उसी ब्रह्म से जन्मे और उसी में लीन हो जाने वाले हैं। यह ब्रह्मांड परिवर्तनशील है। इस जगत का संचालन उसी की शक्ति से स्वत: ही होता है, जैसे कि सूर्य के आकर्षण से ही धरती अपनी धूरी पर टिकी हुई होकर चलायमान है। उसी तरह लाखों सूर्य और तारे एक महासूर्य के आकर्षण से टिके होकर संचालित हो रहे हैं। उसी तरह लाखों महासूर्य उस एक ब्रह्मा की शक्ति से ही जगत में विद्यमान हैं।

आत्मा के बारे में :

आत्मा का स्वरूप ब्रह्म (परमात्मा) के समान है। जैसे सूर्य और दीपक में जो फर्क है उसी तरह आत्मा और परमात्मा में फर्क है। आत्मा के शरीर में होने के कारण ही यह शरीर संचालित हो रहा है। ठीक उसी तरह जिस तरह कि संपूर्ण धरती, सूर्य, ग्रह-नक्षत्र और तारे भी उस एक परमपिता की उपस्थिति से ही संचालित हो रहे हैं। आत्मा का न जन्म होता है और न ही उसकी कोई मृत्यु होती है। आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है। यह आत्मा अजर और अमर है। आत्मा को प्रकृति द्वारा 3 शरीर मिलते हैं- एक, वह जो स्थूल आंखों से दिखाई देता है। दूसरा, वह जिसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं, जो कि ध्यानी को ही दिखाई देता है और तीसरा, वह शरीर जिसके कारण शरीर कहते हैं, उसे देखना अत्यंत ही मुश्किल है। बस उसे वही आत्मा महसूस करती है, जो कि उसमें रहती है। आप और हम दोनों ही आत्मा हैं। हमारे नाम और शरीर अलग-अलग हैं लेकिन भीतरी स्वरूप एक ही हैं।

स्वर्ग और नरक के बारे में :

वेदों के अनुसार पुराणों के स्वर्ग या नर्क को गतियों से समझा जा सकता है। स्वर्ग और नर्क 2 गतियां हैं। आत्मा जब देह छोड़ती है तो मूलत: 2 तरह की गतियां होती हैं- 1.अगति और 2.गति।

1.अगति : अगति में व्यक्ति को मोक्ष नहीं मिलता है उसे फिर से जन्म लेना पड़ता है।

2.गति : गति में जीव को किसी लोक में जाना पड़ता है या वह अपने कर्मों से मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

*अगति के 4 प्रकार हैं- 1.क्षिणोदर्क, 2.भूमोदर्क, 3.अगति और 4. दुर्गति।

*क्षिणोदर्क : क्षिणोदर्क अगति में जीव पुन: पुण्यात्मा के रूप में मृत्युलोक में आता है और संतों-सा जीवन जीता है।

*भूमोदर्क : भूमोदर्क में वह सुखी और ऐश्वर्यशाली जीवन पाता है।

*अगति : अगति में नीच या पशु जीवन में चला जाता है।

*दुर्गति : दुर्गति में वह कीट-कीड़ों जैसा जीवन पाता है।

* गति के भी 4 प्रकार- गति के अंतर्गत 4 लोक दिए गए हैं- 1. ब्रह्मलोक, 2.देवलोक, 3.पितृलोक और 4.नर्कलोक। जीव अपने कर्मों के अनुसार उक्त लोकों में जाता है।

तीन मार्गों से यात्रा :

जब भी कोई मनुष्य मरता है या आत्मा शरीर को त्यागकर यात्रा प्रारंभ करती है तो इस दौरान उसे 3 प्रकार के मार्ग मिलते हैं। ऐसा कहते हैं कि उस आत्मा को किस मार्ग पर चलाया जाएगा और यह केवल उसके कर्मों पर निर्भर करता है। ये 3 मार्ग हैं- अर्चि मार्ग, धूम मार्ग और उत्पत्ति-विनाश मार्ग। अर्चि मार्ग ब्रह्मलोक और देवलोक की यात्रा के लिए होता है, वहीं धूममार्ग पितृलोक की यात्रा पर ले जाता है और उत्पत्ति-विनाश मार्ग नर्क की यात्रा के लिए है।

धर्म और मोक्ष के बारे में :

धर्मग्रंथों के अनुसार धर्म का अर्थ है यम और नियम को समझकर उसका पालन करना। नियम ही धर्म है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से मोक्ष ही अंतिम लक्ष्य होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार व्यक्ति को मोक्ष के बारे में विचार करना चाहिए। मोक्ष क्या है? स्थितप्रज्ञ आत्मा को मोक्ष मिलता है। मोक्ष का भावार्थ यह कि आत्मा शरीर नहीं है, इस सत्य को पूर्णत: अनुभव करके ही अशरीरी होकर स्वयं के अस्तित्व को पुख?ता करना ही मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है।

व्रत और त्योहार के बारे में :

हिन्दू धर्म के सभी व्रत, त्योहार या तीर्थ सिर्फ मोक्ष की प्राप्त हेतु ही निर्मित हुए हैं। मोक्ष तब मिलेगा जब व्यक्ति स्वस्थ रहकर प्रसन्नचित्त और खुशहाल जीवन जीएगा। व्रत से शरीर और मन स्वस्थ होता है। त्योहार से मन प्रसन्न होता है और तीर्थ से मन और मस्तिष्क में वैराग्य और अध्यात्म का जन्म होता है।

मौसम और ग्रह-नक्षत्रों की गतियों को ध्यान में रखकर बनाए गए व्रत और त्योहारों का महत्व अधिक है। व्रतों में चतुर्थी, एकादशी, प्रदोष, अमावस्या, पूर्णिमा, श्रावण मास और कार्तिक मास के दिन व्रत रखना श्रेष्ठ है। यदि उपरोक्त सभी नहीं रख सकते हैं तो श्रावण के पूरे महीने व्रत रखें। त्योहारों में मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, नवरात्रि, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी और हनुमान जन्मोत्सव ही मनाएं। पर्व में श्राद्ध और कुंभ का पर्व जरूर मनाएं।

व्रत करने से काया निरोगी और जीवन में शांति मिलती है। सूर्य की 12 और 12 चन्द्र की संक्रांतियां होती हैं। सूर्य संक्रांतियों में उत्सव का अधिक महत्व है, तो चन्द्र संक्रांति में व्रतों का अधिक महत्व है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन। इसमें से श्रावण मास को व्रतों में सबसे श्रेष्ठ मास माना गया है। इसके अलावा प्रत्येक माह की एकादशी, चतुर्दशी, चतुर्थी, पूर्णिमा, अमावस्या और अधिकमास में व्रतों का अलग-अलग महत्व है। सौरमास और चान्द्रमास के बीच बढ़े हुए दिनों को मलमास या अधिकमास कहते हैं। साधुजन चातुर्मास अर्थात 4 महीने श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक माह में व्रत रखते हैं।

उत्सव, पर्व और त्योहार सभी का अलग-अलग अर्थ और महत्व है। प्रत्येक ऋतु में एक उत्सव है। उन त्योहार, पर्व या उत्सव को मनाने का महत्व अधिक है जिनकी उत्पत्ति स्थानीय परंपरा या संस्कृति से न होकर जिनका उल्लेख वैदिक धर्मग्रंथ, धर्मसूत्र, स्मृति, पुराण और आचार संहिता में मिलता है। चन्द्र और सूर्य की संक्रांतियों के अनुसार कुछ त्योहार मनाए जाते हैं। 12 सूर्य संक्रांतियां होती हैं जिसमें 4 प्रमुख हैं- मकर, मेष, तुला और कर्क। इन 4 में मकर संक्रांति महत्वपूर्ण है। सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ, संक्रांति और कुंभ। पर्वों में रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गुरुपूर्णिमा, वसंत पंचमी, हनुमान जयंती, नवरात्रि, शिवरात्रि, होली, ओणम, दीपावली, गणेश चतुर्थी और रक्षाबंधन प्रमुख हैं। हालांकि सभी में मकर संक्रांति और कुंभ को सर्वोच्च माना गया है।

तीर्थ के बारे में :

तीर्थ और तीर्थयात्रा का बहुत पुण्य है। जो मनमाने तीर्थ और तीर्थ पर जाने के समय हैं, उनकी यात्रा का सनातन धर्म से कोई संबंध नहीं। तीर्थों में 4 धाम ज्योतिर्लिंग, अमरनाथ, शक्तिपीठ और सप्तपुरी की यात्रा का ही महत्व है। अयोध्या, मथुरा, काशी और प्रयाग को तीर्थों का प्रमुख केंद्र माना जाता है जबकि कैलाश मानसरोवर को सर्वोच्च तीर्थ माना गया है। बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम्‌ और जगन्नाथपुरी ये 4 धाम हैं। सोमनाथ, द्वारका, महाकालेश्वर, श्रीशैल, भीमाशंकर, ?कारेश्वर, केदारनाथ, विश्वनाथ, त्र्यंबकेश्वर, रामेश्वरम्, घृष्णेश्वर और बैद्यनाथ ये द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं। काशी, मथुरा, अयोध्या, द्वारका, माया, कांची और अवंति उज्जैन ये सप्तपुरियां हैं। उपरोक्त कहे गए तीर्थ की यात्रा ही धर्मसम्मत है।

संस्कार के बारे में :

संस्कारों के प्रमुख प्रकार 16 बताए गए हैं जिनका पालन करना हर हिन्दू का कर्तव्य है। इन संस्कारों के नाम है- गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णवेधन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशांत, सम्वर्तन, विवाह और अंत्येष्टि। प्रत्येक हिन्दू को उक्त संस्कार को अच्छे से नियमपूर्वक करना चाहिए। यह मनुष्य के सभ्य और हिन्दू होने की निशानी है। उक्त संस्कारों को वैदिक नियमों के द्वारा ही संपन्न किया जाना चाहिए।

पाठ करने के बारे में :

वेदों, उपनिषद या गीता का पाठ करना या सुनना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है। उपनिषद और गीता का स्वयं अध्ययन करना और उसकी बातों की किसी जिज्ञासु के समक्ष चर्चा करना पुण्य का कार्य है। लेकिन किसी बहसकर्ता या भ्रमित व्यक्ति के समक्ष वेद वचनों को कहना निषेध माना जाता है। प्रतिदिन धर्मग्रंथों का कुछ पाठ करने से देव शक्तियों की कृपा मिलती है। हिन्दू धर्म में वेद, उपनिषद और गीता के पाठ करने की परंपरा प्राचीनकाल से रही है। वक्त बदला तो लोगों ने पुराणों में उल्लेखित कथा की परंपरा शुरू कर दी, जबकि वेदपाठ और गीता पाठ का अधिक महत्व है।

धर्म, कर्म और सेवा के बारे में :

धर्म-कर्म और सेवा का अर्थ यह कि हम ऐसा कार्य करें जिससे हमारे मन और मस्तिष्क को शांति मिले और हम मोक्ष का द्वार खोल पाएं। साथ ही जिससे हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय हित भी साधे जाते हों अर्थात ऐसा कार्य जिससे परिवार, समाज, राष्ट्र और स्वयं को लाभ मिले। धर्म-कर्म को कई तरीके से साधा जा सकता है, जैसे- 1.व्रत, 2. सेवा, 3.दान, 4.यज्ञ, 5.प्रायश्चित, दीक्षा देना और मंदिर जाना आदि।

सेवा का मतलब यह कि सर्वप्रथम माता-पिता, फिर बहन-बेटी, फिर भाई-बंधु की किसी भी प्रकार से सहायता करना ही धार्मिक सेवा है। इसके बाद अपंग, महिला, विद्यार्थी, संन्यासी, चिकित्सक और धर्म के रक्षकों की सेवा-सहायता करना पुण्य का कार्य माना गया है। इसके अलावा सभी प्राणियों, पक्षियों, गाय, कुत्ते, कौओं, चींटी आति को अन्न-जल देना- ये सभी यज्ञ कर्म में आते हैं।

दान के बारे में :

दान से इन्द्रिय भोगों के प्रति आसक्ति छूटती है। मन की ग्रंथियां खुलती हैं जिससे मृत्युकाल में लाभ मिलता है। देव आराधना का दान सबसे सरल और उत्तम उपाय है। वेदों में 3 प्रकार के दाता कहे गए हैं- 1.उक्तम, 2.मध्यम और 3. निकृष?टतम। धर्म की उन्नति, रूप, सत्य विद्या के लिए जो देता है, वह उत्तम। कीर्ति या स्वार्थ के लिए जो देता है वह मध्यम और जो वेश ?यागमनादि, भांड, भाटे, पंडे को देता वह निकृष्ट माना गया है। पुराणों में अन्नदान, वस्त्रदान, विद्यादान, अभयदान और धनदान को ही श्रेष्ठ माना गया है, यही पुण ?य भी है।

यज्ञ के बारे में :

यज्ञ के प्रमुख 5 प्रकार हैं- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ। यज्ञ पालन से ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण, धर्म ऋण, प्रकृति ऋण और मातृ ऋण समाप्त होता है। नित्य संध्यावंदन, स्वाध्याय तथा वेदपाठ करने से ब्रह्म यज्ञ संपन्न होता है। देवयज्ञ सत्संग तथा अग्निहोत्र कर्म से संपन्न होता है। अग्नि जलाकर होम करना अग्निहोत्र यज्ञ है। पितृयज्ञ को श्राद्धकर्म भी कहा गया है। यह यज्ञ पिंडदान, तर्पण और संतानोत्पत्ति से संपन्न होता है। वैश्वदेव यज्ञ को भूत यज्ञ भी कहते हैं। सभी प्राणियों तथा वृक्षों के प्रति करुणा और कर्तव्य समझना व उन्हें अन्न-जल देना ही भूत यज्ञ कहलाता है। अतिथि यज्ञ से अर्थ मेहमानों की सेवा करना। अपंग, महिला, विद्यार्थी, संन्यासी, चिकित्सक और धर्म के रक्षकों की सेवा-सहायता करना ही अतिथि यज्ञ है। इसके अलावा अग्निहोत्र, अश्वमेध, वाजपेय, सोमयज्ञ, राजसूय और अग्निचयन का वर्णण यजुर्वेद में मिलता है।

मंदिर जाने के बारे में :

प्रति गुरुवार को मंदिर जाना चाहिए। घर में मंदिर नहीं होना चाहिए। मंदिर में जाकर परिक्रमा करना चाहिए। भारत में मंदिरों, तीर्थों और यज्ञादि की परिक्रमा का प्रचलन प्राचीनकाल से ही रहा है। मंदिर की 7 बार (सप्तपदी) परिक्रमा करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह 7 परिक्रमा विवाह के समय अग्नि के समक्ष भी की जाती है। इसी प्रदक्षिणा को इस्लाम धर्म ने परंपरा से अपनाया जिसे तवाफ कहते हैं। प्रदक्षिणा षोडशोपचार पूजा का एक अंग है। प्रदक्षिणा की प्रथा अतिप्राचीन है। हिन्दू सहित जैन, बौद्ध और सिख धर्म में भी परिक्रमा का महत्व है। इस्लाम में मक्का स्थित काबा की 7 परिक्रमा का प्रचलन है। पूजा-पाठ, तीर्थ परिक्रमा, यज्ञादि पवित्र कर्म के दौरान बिना सिले सफेद या पीत वस्त्र पहनने की परंपरा भी प्राचीनकाल से हिन्दुओं में प्रचलित रही है। मंदिर जाने या संध्यावंदन के पूर्व आचमन या शुद्धि करना जरूरी है। इसे इस्लाम में वुजू कहा जाता है।

संध्यावंदन के बारे में :

संध्यावंदन को संध्योपासना भी कहते हैं। मंदिर में जाकर संधिकाल में ही संध्यावंदन की जाती है। वैसे संधि 8 वक्त की मानी गई है। उसमें भी 5 महत्वपूर्ण हैं। 5 में से भी सूर्य उदय और अस्त अर्थात 2 वक्त की संधि महत्वपूर्ण है। इस समय मंदिर या एकांत में शौच, आचमन, प्राणायामादि कर गायत्री छंद से निराकार ईश्वर की प्रार्थना की जाती है। संध्योपासना के 4 प्रकार हैं- 1.प्रार्थना, 2.ध्यान, 3. कीर्तन और 4.पूजा-आरती। व्यक्ति की जिसमें जैसी श्रद्धा है, वह वैसा करता है।

धर्म की सेवा के बारे में :

धर्म की प्रशंसा करना और धर्म के बारे में सही जानकारी को लोगों तक पहुंचाना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य होता है। धर्म प्रचार में वेद, उपनिषद और गीता के ज्ञान का प्रचार करना ही उत्तम माना गया है। धर्म प्रचारकों के कुछ प्रकार हैं। हिन्दू धर्म को पढ़ना और समझना जरूरी है। हिन्दू धर्म को समझकर ही उसका प्रचार और प्रसार करना जरूरी है। धर्म का सही ज्ञान होगा, तभी उस ज्ञान को दूसरे को बताना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को धर्म प्रचारक होना जरूरी है। इसके लिए भगवा वस्त्र धारण करने या संन्यासी होने की जरूरत नहीं। स्वयं के धर्म की तारीफ करना और बुराइयों को नहीं सुनना ही धर्म की सच्ची सेवा है।

मंत्र के बारे में :

वेदों में बहुत सारे मंत्रों का उल्लेख मिलता है, लेकिन जपने के लिए सिर्फ प्रणव और गायत्री मंत्र ही कहा गया है, बाकी मंत्र किसी विशेष अनुष्ठान और धार्मिक कार्यों के लिए है। वेदों में गायत्री नाम से छंद है जिसमें हजारों मंत्र हैं किंतु प्रथम मंत्र को ही गायत्री मंत्र माना जाता है। उक्त मंत्र के अलावा किसी अन्य मंत्र का जाप करते रहने से समय और ऊर्जा की बर्बादी है। गायत्री मंत्र की महिमा सर्वविदित है। दूसरा मंत्र है महामृत्युंजय मंत्र, लेकिन उक्त मंत्र के जप और नियम कठिन है इसे किसी जानकार से पूछकर ही जपना चाहिए।

प्रायश्चित के बारे में :

प्राचीनकाल से ही हिन्दुओं में मंदिर में जाकर अपने पापों के लिए प्रायश्चित करने की परंपरा रही है। प्रायश्चित करने के महत्व को स्मृति और पुराणों में विस्तार से समझाया गया है। गुरु और शिष्य परंपरा में गुरु अपने शिष्य को प्रायश्चित करने के अलग-अलग तरीके बताते हैं। दुष्कर्म के लिए प्रायश्चित करना तपस्या का एक दूसरा रूप है। यह मंदिर में देवता के समक्ष 108 बार साष्टांग प्रणाम, मंदिर के इर्द-गिर्द चलते हुए साष्टांग प्रणाम और कावडी अर्थात वह तपस्या, जो भगवान मुरुगन को अर्पित की जाती है, जैसे कृत्यों के माध्यम से की जाती है। मूलत: अपने पापों की क्षमा भगवान शिव और वरुणदेव से मांगी जाती है, क्योंकि क्षमा का अधिकार उनको ही है। जैन धर्म में 'क्षमा पर्व' प्रायश्चित करने का दिन है।

दीक्षा देने के बारे में :

दीक्षा देने का प्रचलन वैदिक ऋषियों ने प्रारंभ किया था। प्राचीनकाल में पहले शिष्य और ब्राह्मण बनाने के लिए दीक्षा दी जाती थी। माता-पिता अपने बच्चों को जब शिक्षा के लिए भेजते थे तब भी दीक्षा दी जाती थी। हिन्दू धर्मानुसार दिशाहीन जीवन को दिशा देना ही दीक्षा है। दीक्षा एक शपथ, एक अनुबंध और एक संकल्प है। दीक्षा के बाद व्यक्ति द्विज बन जाता है। द्विज का अर्थ दूसरा जन्म। दूसरा व्यक्तित्व। सिख धर्म में इसे अमृत संचार कहते हैं। यह दीक्षा देने की परंपरा जैन धर्म में भी प्राचीनकाल से रही है, हालांकि दूसरे धर्मों में दीक्षा को अपने धर्म में धर्मांतरित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। हिन्दू धर्म से इस परंपरा को ईसाई धर्म ने अपनाया जिसे वे बपस्तिमा कहते हैं। अलग-अलग धर्मों में दीक्षा देने के भिन्न-भिन्न तरीके हैं। यहूदी धर्म में खतना करके दीक्षा दी जाती है।

वेद से निकला षड्दर्शन

वेद और उपनिषद को पढ़कर ही 6 ऋषियों ने अपना दर्शन गढ़ा है। इसे भारत का षड्दर्शन कहते हैं। दरअसल, यह वेद के ज्ञान का श्रेणीकरण है। ये 6 दर्शन हैं- 1.न्याय, 2.वैशेषिक, 3.सांख्य, 4. योग, 5.मीमांसा और 6.वेदांत। वेदों के अनुसार सत्य या ईश्वर को किसी एक माध्यम से नहीं जाना जा सकता। इसीलिए वेदों ने कई मार्गों या माध्यमों की चर्चा की है।

दारू-भाटखेड़ा मार्ग पर पुल की मांग :15 हजार आबादी के लिए 4.38 करोड़ का एस्टीमेट तैयार, बजट अटका

नीमच । ग्रामीणों ने प्रशासन को अवगत कराया कि स्थानीय विधायक और जनता की पहल पर लोक निर्माण विभाग के सेतु निर्माण उपसंभाग मंदसौर द्वारा इस नाले पर उच्चस्तरीय पुल निर्माण के लिए 437.78 लाख रुपए (लगभग 4.38 करोड़) का प्रथम स्तरीय प्राक्कलन (स्टेज-1 एस्टीमेट) तैयार किया गया था। यह एस्टीमेट इसी साल 2 फरवरी को आगामी कार्रवाई हेतु शासन को भेजा जा चुका है। ग्रामीणों ने प्रशासन को अवगत कराया कि स्थानीय विधायक और जनता की पहल पर लोक निर्माण विभाग के सेतु निर्माण उपसंभाग मंदसौर द्वारा इस नाले पर उच्चस्तरीय पुल निर्माण के लिए 437.78 लाख रुपए (लगभग 4.38 करोड़) का प्रथम स्तरीय प्राक्कलन (स्टेज-1 एस्टीमेट) तैयार किया गया था। यह एस्टीमेट इसी साल 2 फरवरी को आगामी कार्रवाई हेतु शासन को भेजा जा चुका है। तकनीकी रिपोर्ट तैयार होने के बावजूद, मुख्य बजट में इस कार्य हेतु राशि स्वीकृत नहीं हुई है, जिससे धरातल पर काम शुरू नहीं हो पा रहा है। ग्रामीण इस स्थिति से असंतुष्ट हैं।

181 की कार्यप्रणाली पर सवाल - इस दौरान ग्रामीणों ने सीएम हेल्पलाइन (181) की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने बताया कि जब इस जनसमस्या को लेकर शिकायत दर्ज कराई गई, तो स्थानीय अधिकारियों द्वारा 'बजट मुख्यमंत्री या विधायक से स्वीकृत कराएं' जैसा गैर-जिम्मेदाराना जवाब देकर शिकायत बंद करने का दबाव बनाया जा रहा है। समस्त क्षेत्रवासियों ने कलेक्टर से अनुरोध किया है कि समस्या की गंभीरता को देखते हुए जिला स्तर से राज्य शासन भोपाल को इस पुल निर्माण के बजट आवंटन हेतु एक विशेष अनुशंसा पत्र भेजा जाए। उन्होंने आगामी अनुपूरक बजट या आगामी बजट सत्र में 4.38 करोड़ रुपए की राशि को शामिल करवाकर प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान करवाने के लिए उचित कार्रवाई की मांग की है।

400 ग्राम एमडी ड्रग्स सप्लाई करने वाला मुख्य आरोपी गिरफ्तार, राजस्थान से दबोचा, तस्करी नेटवर्क के बड़े खुलासे की उम्मीद

मल्हारगढ़। जिले में अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मल्हारगढ़ पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। 400 ग्राम एमडी ड्रग्स मामले में फरार चल रहे मुख्य सप्लायर को पुलिस ने राजस्थान से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी से पूछताछ जारी है, जिससे मादक पदार्थों की तस्करी के नेटवर्क से जुड़े और बड़े खुलासे होने की संभावना है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तेज सिंह बघेल एवं एसडीओपी कीर्ति बघेल के मार्गदर्शन में मल्हारगढ़ थाना पुलिस ने यह कार्रवाई की। मामला थाना मल्हारगढ़ के अपराध क्रमांक 102/2026 से जुड़ा है, जिसमें एनडीपीएस एक्ट की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था। पुलिस के अनुसार 5 जून को भैंसा खेड़ा फंटा क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए मोहम्मद असफाक उर्फ समीर निवासी मल्हारगढ़ को 400 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद ड्रग्स खरीदने वाले शाहनवाज उर्फ वीरप्पन मेवाती निवासी मेवातीपुरा, जावरा को भी पकड़ा गया था। पूछताछ और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर पुलिस को ड्रग्स सप्लायर की जानकारी मिली। जांच में सामने आया कि जब्त एमडी ड्रग्स अमीर हमजा उर्फ गट्टू लाला पिता कमाल खां, निवासी गोवर्धनपुरा, थाना हथुनिया, जिला प्रतापगढ़ (राजस्थान) से लाई गई थी। पुलिस ने आरोपी को 7 जून को राजस्थान से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब आरोपी अमीर हमजा से यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि एमडी ड्रग्स कहां से लाई गई थी और इसके नेटवर्क में कौन-कौन लोग शामिल हैं।

12 जून को नीमच आएंगे अजा आयोग सदस्य रामलाल मालवीय, योजनाओं की समीक्षा के साथ करेंगे जनसंवाद व विकास कार्यों का निरीक्षण

नीमच। मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य रामलाल मालवीय 11 एवं 12 जून को नीमच जिले के दौरे पर रहेंगे। इस दौरान वे आदिम जाति कल्याण विभाग की योजनाओं की समीक्षा करेंगे, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों से चर्चा करेंगे तथा विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण भी करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मालवीय 11 जून की शाम उज्जैन से प्रस्थान कर नीमच पहुंचेंगे और सर्किट हाउस में रात्रि विश्राम करेंगे। 12 जून को वे कलेक्टोरेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं एवं विभिन्न विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। समीक्षा बैठक के बाद वे सर्किट हाउस में जनप्रतिनिधियों, समाज के गणमान्य नागरिकों एवं आमजन से मुलाकात कर उनकी समस्याएं और सुझाव सुनेंगे। इसके पश्चात दोपहर में जिले में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे। दौरे के समापन पर आयोग सदस्य रामलाल मालवीय नीमच से उज्जैन होते हुए भोपाल के लिए रवाना होंगे।

सड़क चौड़ीकरण पर बवाल : 200 साल पुराने बालाजी मंदिर को बचाने उठी मांग, कलेक्ट्रेट में गूंजा हिंदू समाज का विरोध

नीमच। शहर में फोरलेन सड़क निर्माण के दौरान श्री माधोपुरी बालाजी मंदिर को संभावित नुकसान पहुंचने की आशंका को लेकर सर्व हिंदू समाज ने सोमवार को कलेक्टोरेट पहुंचकर तहसीलदार संजय मालवीय को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। समाजजनों ने मंदिर की ओर हो रहे सड़क और पुलिया चौड़ीकरण कार्य पर आपत्ति जताते हुए मंदिर को सुरक्षित रखने की मांग की।

ज्ञापन में बताया गया कि नीमच बस स्टैंड से महू रोड की पहली पुलिया के समीप स्थित करीब 200 वर्ष पुराने श्री माधोपुरी बालाजी मंदिर के पास फोरलेन सड़क निर्माण कार्य चल रहा है। सर्व हिंदू समाज का आरोप है कि प्रारंभिक नक्शे में मंदिर की ओर पर्याप्त दूरी छोड़ी गई थी, लेकिन बाद में संशोधित योजना के तहत सड़क और पुलिया का विस्तार मंदिर की ओर किया जा रहा है, जिससे मंदिर परिसर का बड़ा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। समाज के प्रतिनिधियों ने कहा कि मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान भी है। मंदिर परिसर में भगवान भोलेनाथ, माता संतोषी, गणेशजी एवं साईं बाबा के मंदिर भी स्थित हैं। यदि सड़क निर्माण मंदिर की ओर बढ़ाया गया तो धार्मिक स्थल को क्षति पहुंचने की आशंका है।

ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि पूर्व में क्षेत्रीय विधायक से चर्चा के दौरान मंदिर की भूमि को नुकसान नहीं पहुंचाने का आश्वासन दिया गया था। इसके बावजूद हाल के दिनों में निर्माण कार्य की दिशा बदलने से श्रद्धालुओं और समाजजनों में चिंता बढ़ गई है। सर्व हिंदू समाज ने प्रशासन से मांग की है कि मंदिर की ओर हो रहे पुलिया और सड़क चौड़ीकरण कार्य को तत्काल रोका जाए तथा सड़क का विस्तार दूसरी ओर से किया जाए, जहां पर्याप्त खाली भूमि उपलब्ध है। इससे सड़क निर्माण भी प्रभावित नहीं होगा और मंदिर की सुरक्षा भी बनी रहेगी। ज्ञापन सौंपने के दौरान बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे। समाज ने चेतावनी दी कि यदि मंदिर की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की गई तो आगे व्यापक जनआंदोलन किया जाएगा।

चार आईटीआई में 11 जून को करियर काउंसलिंग मेला: युवाओं को मिलेंगे रोजगार व कौशल विकास के नए अवसर

नीमच। जिले के समस्त युवाओं एवं युवतियों के लिए रोजगार एवं कौशल विकास के अवसर बढ़ाने के उद्देश्य से 11 जून 2026 को एक विशेष आईटीआई पंजीयन मेला एवं करियर काउंसलिंग शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक आयोजित होगा। इस शिविर में अभ्यर्थियों को विभिन्न ट्रेड्स, प्रशिक्षण अवसरों एवं रोजगार से जुड़ी विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी। साथ ही विशेषज्ञों द्वारा करियर काउंसलिंग कर युवाओं को उचित दिशा में मार्गदर्शन दिया जाएगा। महिला अभ्यर्थियों के लिए 35 प्रतिशत सीटें आरक्षित रखी गई हैं, जिससे उन्हें कौशल विकास के अधिक अवसर प्राप्त हो सकें। इच्छुक अभ्यर्थी अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर शासकीय आईटीआई नीमच (डूंगलावदा), जावद, मनासा एवं रामपुरा संस्थानों में पहुंचकर अपना पंजीयन करा सकते हैं। यह शिविर युवाओं के भविष्य निर्माण और रोजगार उपलब्धता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।